A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त शैव-बंदिशों का सांगीतिक व साहित्यिक अध्ययन

Vipan Kumar
Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla
Dr. Jeetram Sharma
Chairman, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

OPEN ACCESS

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत या बृहत रूप में संगीत की जड़ें मूलत: सृष्टि की रचना में ही निहित है अर्थात सृष्टि की रचना के साथ ही नाद तथा नाद से संगीतोत्पति हुई। विशेष रूप से जब हम भारतीय संगीत की विशुद्ध शास्त्रीय परंपरा की चर्चा करते हैं तो धर्म का आध्यात्म से संगीत को जोड़ा जाना एक जाहिर सी बात है। सृष्टि के रचयेता ब्रह्मा को ही संगीत का जनक कहा जाता है। ब्रह्मा से यह विद्या शिव, शिव से सरस्वती, सरस्वती से नारद तथा नारद के माध्यम से यह कला भू-लोक पर गंधर्व, किन्नर, अपसराओं तक पहुंची। इन देवी-देवताओं में सबसे प्रगाढ़ सांगीतिक स्वरूप अगर किसी का है तो वे ''शिव'' हैं। संगीत के विभिन्न कालखण्डों में शिव से संबंधित गेय साहित्य का उल्लेख प्रचुरता से मिलता है। सामवेद में शिव से संबंधित गेय साम, शिव से संबंधित गेय जातियां, ध्रुपद की बंदिशें व आधुनिक काल में अनेकों ख्याल की बंदिशें शिव साहित्यिक व सांगीतिक आधार लेकर रचित हैं। इन बंदिशों में शिव का सरल, गंभीर, सौम्य, प्रलयंकर, रौद्र व अदभुत स्वरूप विभिन्न साहित्यिक अलंकरणों तथा स्वरावलियों के माध्यम से चित्रित किया जाता है। ये बंदिशें न केवल साधक को आध्यात्मिक उन्नति की तरफ लेकर जाती है बल्कि साधना का आत्मिक बल भी प्रदान करती है।

मुख्य शब्द: *भारतीय शास्त्रीय संगीत, शैव-बंदिशें*

भूमिका

मानव सभ्यता जैसे-जैसे अस्तित्व में आई तो उन्होंने ईश्वर आराधना की आवश्यकता को महसूस किया ऐसे में दो मूल कल्ट प्रसिद्ध हुए-वैष्णव व शैव। सूर्य व विष्णु के उपासक वैष्णव कहलाए तथा चंद्र व शिव उपासक शैव कहलाए। प्राचीन काल से ही संगीत को ईश्वरोपासना का मूल तत्व माना गया है पदम् पुराण के उत्तरखण्ड में भी कहा गया है-

नाहं वसामि बैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद:।।

अर्थात भगवान स्वयं कहते हैं-हे नारद। मैं न तो बैकुण्ठ में रहता हूं और न ही योगियों के हृदय में। मैं तो वहीं वास करता हूं जहां प्रेमाकुल होकर भक्त मेरे नाम का कीर्तन करते हैं।

प्रत्येक साधक को अपनी साधना में दिव्यता लाने के लिए ईश्वरीय तत्व को सम्मिलित करना पड़ता है इसी प्रकार जो शिव के उपासक थे उन्होंने ऐसी कई शैव बंदिशों की रचना की जो न केवल रागानुकूल उपयुक्त हैं बल्कि रस व भावानुकूल भी श्रेष्ठतम है।

भारतीय संगीत में शिव तत्व

शिव का यदि सम्पूर्ण व्यक्तित्व देखा जाए तो शिव के पूरे स्वरूप से ही संगीत रूपी दर्शन होते है। शिव के हाथ में डमरु, कमरबंध में बंधा श्रृंग वाद्य व उनके तांडवमय नृत्यरत नटराज स्वरूप से उनकी सम्पूर्ण सांगीतिक छवि का उद्बोधन होता है। प्राचीन ग्रंथों में यह भी उल्लेख मिलता है कि शिव के पंचमुखों से पांच रागों का निर्माण हुआ इसके अलावा शिव को रूद्र वीणा का उद्गम कर्ता भी कहा जाता है। पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख है कि ''नृत्य के बाद शिव ने चौदह बार डमरु से कुल चौदह सूत्र सृजित हुए।'' यही चौदह सूत्र, महेश्वर सूत्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये 14 सूत्र संगीत व साहित्य का आधार कहलाए। वेदों का बीज मंत्र ओम भी शिववाचक है और संगीत में ओंकार की साधना को विशिष्ट स्थान दिया गया है। यह आकार+उकार+ मकार का सम्मिश्रण है। इसी बीजाक्षर से नादोत्पति व नाद से स्वर तथा स्वर से संगीत का सृजन हुआ।

शिव से संबंधित पांच रागों में-श्री, बसंत, भैरव, पंचम व मेघ रागों का सृजन स्वयं शिव ने किया तथा ''पंचतालेश्वर तालें'' चच्चपुट, चाचपुट, षटपितापुत्रक, समविष्टाक व उदघट इन तालों का उद्गम भी शिव मुख से ही हुआ है। राग रागिनी पद्धति में प्रचारित शैवमत में शिव को समर्पित रागों का उल्लेख भी किया गया है जो इस प्रकार से है-

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

शिवमत के राग रागिनी

	राग	रागिनी
1	श्री	मालश्री, त्रिवेणी, गौरी, केदारी, मधुमाधवी, पहाड़िका
2	बसंत	देशी, देवगिरी, बरारी, होडिका, ललिता, हिंडोली
3	भैरव	भैरवी, गुर्जरी, रामकिरी, गुणकिरी, बंगाली, सैंधवी
4	पंचम	विभाषा, भूपाल, कर्णाटी, नरहंसिका, पटमंजरी, मालवी
5	वृहन्नाट	कामोदी, कल्याणी, आभीरी, नाटिका, सारंगी, नट्टहमबीरा
6	मेघ	मल्लारी, सोरठी, सावेरी, कौशिकी, हरश्रृंगार, गांधारी

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बहुत सी तालें ऐसी हैं जिनके नाम शिव के ही नाम पर रखे गए हैं- (1) शंकर ताल (11 मात्रा), (2) महेश ताल, (3) रूद्र ताल (11 मात्रा), (4) पशुपति ताल (26 मात्रा), (5) भैरव ताल (22 मात्रा), (6) शम्भू ताल (10 मात्रा) इत्यादि इनके अलावा कई संगीतकारों ने शिव आराधना की विभिन्न परनों की भी रचना की है। जैसे-ताण्डव नृत्य परन, शिवस्त्रोत ताल परन इत्यादि।

भारतीय शास्त्रीय गायन में प्रयुक्त शैव बंदिशों का अध्ययन

भारतीय शास्त्रीय गायन में जब हम बंदिशों की चर्चा करते है तो उसका सीधा संबंध ध्रुपद व ख्याल गायन से होता है। शिव पर आधारित साहित्य में जहां एक ओर शिव के विभिन्न नामस्वरूपों की आराधना का उल्लेख मिलता है वहीं दूसरी तरफ कुछ बंदिशों में शिवोपासना का उपदेशात्मक स्वरूप भी मिलता है। शैव बंदिशों में राग निर्धारण का विशेष महत्व रहता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में बहुत से राग ऐसे होते हैं जिनमें शैव साहित्य का बंधन उसे एक उचित भावनात्मक स्वरूप प्रदान करता है। राग भैरव, शिवमत भैरव, रागेश्री, मालकौंस, चंद्रकौस, अड़ाना, कल्याण, शिवकल्याण, शिव आभोगी, भूपाली, मेघ, शंकरा, नटभैरव, वैरागी भैरव व बसंत आदि कुछ ऐसे राग है जिनमें शैव साहित्य का प्राबल्य देखने को मिलता है। इसी प्रकार ताल चयन में भी विशेष बल दिया जाता है। नीचे शैव बंदिश का एक उदाहरण दिया जा रहा है।

राग बैरागी भैरव (त्रिताल द्रुतलय)

स्थाई : तेरो ही गुण गावे
तजत सकल मोह पाश नाम जपत, शंकर मदनारी

अंतरा: जगतधारी रूत पिनाक गले सोहत रूण्ड माल
गंगाधर त्रिपुरारी

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
											नि	पनि	पम	रेसा	निसा
											ते	रोऽ	हीऽ	गुऽ	णऽ
मैरे	ऽ	ऽ	ऽ	सा	-	-	-	म	-	प	सा	रे	सा	रे	म
गा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	वे	त	ज	त	स	क-

रे	म	प	म	प	नि	प	नि	-	सां	सां	सां	सां	-	सां	-
ल	मो	ऽ	ह	पा	ऽ	श	ना	ऽ	म	ज	प	त	ऽ	शं	ऽ
निप	प	प	प	निनि	पम	पनि	सारें	सांनि	पम	रेसा					
क	र	म	द	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ					

अंतरा

				म	प	म	प	नि	प	नि	सां	नि	सां	-	-
				ज	ग	त	धा	ऽ	री	रू	त	पि	ना	ऽ	ऽ
सां	रें	सारें	मं	रें	सां	सां	सां	नि	सां	नि	प	सां	-	सां	सां
ग	ले	सोऽ	ऽ	ह	त	रू	ऽ	ण्ड	मा	ऽ	ल	ग	ऽ	गा	ऽ
नि	प	प	प	निनि	पम	पनि	सारें	सांनि	पम	रेसा					
ध	र	त्रि	पु	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ					

उपर्युक्त बंदिश का साहित्यिक विवेचन

शब्दार्थ

- जगत धारी : सम्पूर्ण जगत को धारण करने वाले
- रूत पिनाक : आप पिनाक (त्रिशुल धनुष) धारण करने वाले है।
- गले सोहत खण्ड माल : आपके गले में मुण्ड माला सुशोभित है जो वैराग्य व काल में विजय का प्रतीक है।
- गंगाधर : पवित्र गंगा को अपनी जटाओं में विराजने वाले
- त्रिपुरारी : त्रिपुरा सुर का संहार करने वाले

समग्र भावार्थ: यह बंदिश भगवान शिव को मोह बंधन से मुक्त करने वाले, काम पर विजय पाने वाले, जगत के आधार, गंगा को जटाओं में समाहित करने वाले, त्रिपुरासुर के संहारक और वैराग्य तथा शक्ति के प्रतीक के रूप में नमन करती है। इस बंदिश का मुख्य आधार शिवोपासना है। उपर्युक्त बंदिश में ब्रज भाषा की शब्दावली के साथ-साथ मूल संस्कृत भाषा के शब्द भी है जो कि शिव स्तुति की गरिमा बढ़ाते हैं।

सांगीतिक विवेचन

शोधार्थी ने उपर्युक्त बंदिश को पंडित जयतीर्थ मेवुंडी जी के श्री मुख से सुना है। यह बंदिश बैरागी भैरव में निबद्ध है जो कि स्वयं शिव के बैराग्य का आभास करवाती है। तीन ताल द्रुतलय में निबद्ध यह बंदिश बारहवीं मात्रा से उठती है तथा इसका अंतरा पांचवी मात्रा से उठान लेता है जो कि अत्यंत विचित्र सुनाई पड़ता है। द्रुत लय के कारण इसमें एक रौद्र-भक्ति रस दृष्टव्य होता है इसी के साथ-साथ द्रुत लय प्रधान होने के कारण इसमें खुली तानों का अवसर भी मिलता है जो इसके गायन तथा श्रवण में चार चांद लगा देता है। उपर्युक्त बंदिश में मींड गमक व मुर्की/खटक इत्यादि अलंकारिक तत्वों का बहुत सुन्दरता से प्रयोग किया गया है: ''गावे'' शब्द पर बारम्बार मध्यम स्वर से ऋषभ (कोमल) की मींड राग के सौन्दर्य को और भी बढ़ा देती है। बंदिश में स्थायी व अंतरा के आखिरी शब्द मदनारी व त्रिपुरारी को तान अंग में समाहित किया गया है जिससे इस बंदिश में एक विचित्रता दृष्टव्य होती है तथा सुनने वाले का ध्यान आकर्षित करती है। (नि नि पम पनि सारेंसां नि पम रे सा)

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

उपसंहार

शिव एक प्रकार से भारतीय संगीत का पर्याय हैं शिव के बिना संगीत की कल्पना कर पाना भी संभव नहीं है। शोध पत्र का मुख्य केन्द्र बिन्दु शैव बंदिशों का सांगीतिक व साहित्यिक अध्ययन है। शिव संबंधी ध्रुपद व ख्याल की बंदिशों में शिव के कुल 108 नामों में से किसी न किसी नाम स्वरूप का स्वरबद्ध चित्रण मिलता है। जहां शिव के शांत व गंभीर रूप को दर्शाना हो वहां पर राग भैरव, बैरागी, नट भैरव व शिवमत भैरव जैसे रागों का प्रयोग किया जाता है, वहीं दूसरी तरफ शंकरा, भूपाली, देशकार कल्याण इत्यादि राग शिव के वीरत्व व योद्धा स्वरूप का बखान करते है। इन बंदिशों के भावार्थ व स्वरमय अलंकृत स्वरावलियों को समझाने का प्रयास इस शोध पत्र द्वारा किया गया है जो आने वाले संगीत रसिकों व शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. चौरासिया, अमृता, (2022). ध्रुपद गायन एवं वादन शैली, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली
2. वर्मा, देवेन्द्र, (2021). संगीत ज्ञान सुधा, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
3. सिंह, लावण्य कीर्ति, (2024). भारतीय संगीत ग्रंथ, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली
4. शर्मा, भारती, (2022). सांगीतिक एवं धार्मिक परंपरा-एक अवलोकन, संजय प्रकाशन, दिल्ली

साक्षात्कार

1. पंडित जयतीर्थ मेवुंडी, किराना घराना